ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 44, अंक 11 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 1 फरवरी, 2021 से रविवार 7 फरवरी, 2021
विक्रमी सम्वत् 2077 सृष्टि सम्वत् 1960853121
दयानन्दाब्द : 197 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

संसद में प्रस्तुत केन्द्रीय बजट 2021-22

विषम परिस्थितियों में बजट का संतुलन-सराहनीय

पूरी दुनिया कोरोना महामारी के कारण आर्थिक मंदी झेल रही है, भारत जैसे विशाल देश का बजट तय करना बेहद कठिन और चुनौतीभरा कार्य है। वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण ने कठिन परिस्थितियों में भी सभी क्षेत्रों पर समान ध्यान देते हुए एक ऐसा बजट पेश करने की कोशिश की जिससे न सिर्फ भारत की अर्थव्यवस्था फिर से पटरी पर आ पाए, बल्कि सभी क्षेत्रों में विकास भी किया जाए। वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण ने वितीय वर्ष 2021-22 के लिए प्रस्तुत बजट में कोरोनाकाल में उपजे संकट से सबक लेकर सरकार ने स्वास्थ्य बजट में अप्रत्याशित वृद्धि की है। यह जरूरी भी था क्योंकि संकट के दौरान हमारे स्वास्थ्य तंत्र की बदहाली और निजी चिकित्सा तंत्र की मनमानी उजागर हुई है। दूसरे अभी देश में आम लोगों के लिए कोरोना टीकाकरण अभियान चलाया जाना है। बतौर प्रधानमंत्री बजट के दिल में गांव-किसान है। ऐसे वक्त में जब कृषि सुधार के विरोध के दौर में किसान गुस्से में हैं तो कृषि क्षेत्र में ध्यान देना जरूरी था, लेकिन ऐसा भी नहीं कि किसानों को छप्पर फाड़कर दिया गया हो। पीएम किसान सम्मान निधि स्कीम में मिलने वाले पैसे को बढ़ाने की भी चर्चा थी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। इस योजना का लाभ साढ़े ग्यारह करोड़ किसान उठा रहे हैं। बहरहाल, कृषि क्षेत्र को मजबूती देने के लिए और किसानों की आय बढ़ाने के लिए कई कदम उठाये गए हैं। एमएसपी को और मजबूत करने के लिए एग्रीकल्चर इंफ्रास्ट्रक्चर फंड में मदद का प्रावधान किया गया है, जिसके लिए कुछ सामानों पर कृषि अवसंरचना उपकर लगाया गया। किसानों के लोन पर डेढ़ लाख रुपए तक की राशि पर ब्याज की छूट की स्कीम एक साल के लिए बढ़ा दी गई है। देशी कपास को प्रोत्साहन देने के लिए कपास के आयात पर कस्टम ड्यूटी को बढ़ाकर दस फीसदी किया गया है। इससे विदेश से आयात किये गये कपड़े अब महंगे हो जायेंगे। वहीं कच्चे रेशम और रेशमी सूत पर सीमा शुल्क पंद्रह फीसदी किया गया है। सरकार ने स्वदेशी वस्त्र उद्योग को प्रोत्साहन के लिए तीन वर्ष में सात टेक्सटाइल पार्क स्थापित करने की बात कही है। जैसा कि अपेक्षित था सरकार ने कोरोना संकट के बाद स्वास्थ्य बजट को बढ़ाकर 2,23,846 करोड़ किया है। स्वच्छ भारत मिशन के लिए भी करीब डेढ़ लाख करोड़ आबंटित किए हैं।

....सरकार ने स्वदेशी वस्त्र उद्योग को प्रोत्साहन के लिए तीन वर्ष में सात टेक्सटाइल पार्क स्थापित करने की बात कही है। जैसा कि अपेक्षित था सरकार ने कोरोना संकट के बाद स्वास्थ्य बजट को बढ़ाकर 2,23,846 करोड़ किया है। स्वच्छ भारत मिशन के लिए भी करीब डेढ़ लाख करोड़ आबंटित किए हैं।.....वहीं दूसरी ओर आयकर छूट की आस लगाए बैठे मिडल क्लास को निराशा हाथ लगी क्योंकि न तो कोई अतिरिक्त टैक्स में छूट दी गई और न ही टैक्स स्लैब में कोई बदलाव किया गया।.....

वहीं दूसरी ओर आयकर छूट की आस लगाए बैठे मिडल क्लास को निराशा हाथ लगी क्योंकि न तो कोई अतिरिक्त टैक्स में छूट दी गई और न ही टैक्स स्लैब में कोई बदलाव किया गया। हां, इतना जरूर है कि 75 साल से अधिक उम्र के लोगों को आयकर रिटर्न भरने में छूट दी गई है, लेकिन यह छूट सिर्फ पेंशन से होने वाली आय पर ही है। मोदी सरकार ने इस बजट में इंफ्रास्ट्रक्चर और हाइवे निर्माण को लेकर बड़ी घोषणाएं की हैं। अन्य राज्यों के मुकाबले उन राज्यों पर कृपा कुछ ज्यादा है जहां हाल में चुनाव होने हैं। बंगाल से लेकर असम तक राजमार्गों का निर्माण होगा। निसंदेह इस काम से रोजगार नीति को लेकर कुछ विशेष नहीं कहा गया है। न ही किसी रोडमैप का ही जिक्र है कि वितीय वर्ष में कितने रोजगार के अवसरों का सृजन किया जायेगा। दूसरी ओर मेट्रो के लिए ग्यारह हजार करोड़ का प्रावधान किया गया है। इसी तरह सड़क परिवहन मंत्रालय के लिए 1,18,101 करोड़ का अतिरिक्त प्रावधान किया गया है। डिजिटल भुगतान को बढ़ावा देने के लिए पंद्रह सौ करोड़ के वितीय प्रोत्साहन की व्यवस्था की गई है। इस बार के बजट में सरकार ने बीमा क्षेत्र में विदेशी निवेश बढ़ाने और कुछ बैंकों के निजीकरण की घोषणा की है, जिसके जरिये सरकार धन जुटाना चाहती है, बीमा क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की सीमा को 49 फीसदी से बढ़ाकर 74 फीसदी करने का प्रावधान है। इसके साथ ही अर्थव्यवस्था को गति देने के लिए राजकोषीय घाटा जीडीपी का 9.5 फीसदी निर्धारित किया गया है, जिसे 2021-22 में 6.8 फीसदी करने का लक्ष्य है। इसके साथ ही सरकार ने शिक्षा को भी बजट में प्राथमिकता देते हुए केंद्रशासित प्रदेश लद्दाख को एक केंद्रीय विश्वविद्यालय देने के अलावा एनजीओ की भागीदारी के साथ सौ सैनिक स्कूल स्थापित करने की घोषणा भी की है। इसके साथ ही आदिवासी इलाकों में 758 एकलव्य स्कूल खोले जायेंगे। भारत सरकार द्वारा प्रस्तुत किए गए बजट का प्रावधान सराहनीय है। इस अवसर पर आर्य समाज ईश्वर से प्रार्थना करता है कि हमारा देश हर स्तर पर उन्नति-प्रगति और सफलता की ओर अग्रसर हो, सब स्वस्थ हों, सब ऊंचे उठे, आगे बढ़ें, सबके भीतर राष्ट्र भक्ति का उदय हो सब सन्मार्ग पर चलें, सबका कल्याण हो।

– ***सम्पादक***

आर्यसमाज के गौरव, वरिष्ठ वैदिक विद्वान, आदर्श मूर्धन्य वीतराग संन्यासी, दार्शनिक, तपोनिष्ठ पूज्य स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक का निधन

आर्य जगत के वरिष्ठ वैदिक विद्वान, आदर्श सन्यासी, दार्शनिक, तपोनिष्ठ, असंख्य आर्य विद्वानों के निर्माता व मार्गदर्शक, महर्षि दयानन्द के पथानुगामी, आर्य जगत के मूर्धन्य वीतरागी संन्यासी, परम ईश्वर भक्त, सिद्ध योगी, संन्यासियों में शिरोमणि, पूरे विश्व में ईश्वर की उपासना की सबसे सरल पद्धति शुद्ध ज्ञान, शुद्ध कर्म, शुद्ध उपासना के द्वारा अलख जगाने वाले, जिन्होंने गुजरात के रोजड़ में दर्शन योग महाविद्यालय स्थापित करके पूज्य स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक का दिनांक 4 फरवरी, 2021 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 5 फरवरी, 2021 को पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया, जिसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। पूज्य स्वामी सत्यपति जी के निधन से आर्यसमाज ने अपना एक महान गौरव और आदर्श खो दिया है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्यसन्देश परिवार एवं समस्त आर्यजगत् की ओर से पूज्य स्वामी जी को विनम्र श्रद्धांजलि।

सुरेशचन्द्र आर्य	प्रकाश आर्य	अनिल तनेजा	धर्मपाल आर्य	विनय आर्य	विद्यामित्र ठुकराल
प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष	प्रधान	महामन्त्री	कोषाध्यक्ष
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा			दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा		

देववाणी - संस्कृत | वेद-स्वाध्याय

हम अज्ञानी

त्वद्विश्वा सुभग सौभगान्यग्ने वि यन्ति वनिनो न वयाः।
श्रुष्टी रयिर्वाजो वृत्रतूर्ये दिवो वृष्टिडयो रीतिरपाम्।। *– ऋ० 6/13/1*
ऋषिः–**भरद्वाजो बार्हस्पत्यः**।। देवता–**अग्निः**।। छन्दः–**पङ्क्तिः**।।

शब्दार्थ – **अग्ने** = हे अग्ने! **सुभग** = हे सुन्दर ऐश्वर्यवाले! **त्वत्** = तुझसे ही **विश्वा** = सब **सौभगानि** = सुन्दर ऐश्वर्य **वियन्ति** = विविध प्रकार से निकलते हैं, **वनिनः न** = जैसे वृक्ष से **वयाः** = शाखाएँ [विविध प्रकार से निकलती हैं] तुझ वृक्ष का सेवन करनेवालों को **श्रुष्टिः** = शीघ्र ही **रयिः** = भौतिक धन **वृत्रतूर्ये वाजः** = युद्ध में बल **दिवः वृष्टिः** = अन्तरिक्ष की दिव्य वृष्टि तथा **अपां रीतिः** = इन जलों को गति देनेवाली **ईडयः** = स्तुत्य ज्योति प्राप्त हो जाती है।

विनय – हम कितने मूर्ख हैं कि मूल को न सींचकर पत्तों को पानी ने रहे हैं! हे अग्ने! तुम तो सब सौभगों के कल्पतरु हो, परन्तु हम एक तुम्हारा सेवन न कर अपनी अनगिनत इच्छाओं के, इष्ट वस्तुओं के पीछे मारे-मारे फिर रहे हैं। इस संसार में जो भी कुछ विविध प्रकार के सौभाग्य के सामान दृष्टिगोचर हो रहे हैं, जो भी कुछ सुन्दर ऐश्वर्य दीख रहे हैं वे सब–के–सब एक तुमसे ही निकले हैं, तुमसे ही सर्वत्र फैले हैं। यह विश्व अनन्त प्रकार की सुन्दर सम्पत्तियों से भरा पड़ा है उन सबके मूल में, हे सुभग! तुम ही हो। यदि हम एक तुम्हारी उपासना करें, तो हमारी शेष सब उपास्य वस्तुएँ हमें स्वयमेव मिल जाएँ, तुम वृक्ष के प्राप्त करने से शेष शाखा, डाली, पुष्प, फल आदि सब–कुछ हमें स्वयमेव प्राप्त हो जाएँ। एक तुम्हारे सुभग सेवन से हमें सब सौभग मिल जाएँ। इतना ही नहीं, किन्तु ये सौभग, ये सुन्दर ऐश्वर्य हमें ठीक प्रकार से और ठीक प्रमाण में मिल जाएँगे। जब हम तेरा सेवन करेंगे तो हमें जब जिस ऐश्वर्य की, जिस क्रम से, जिस मात्रा में आवश्यकता होगी, वह ऐश्वर्य उसी क्रम, उसी मात्रा में हमें ठीक–ठीक मिलता जाएगा और बड़ी शीघ्रता से तुरन्त मिलता जाएगा। तेरे भजनेवाले को सब भौतिक धन, उसकी पार्थिव (शारीरिक) आवश्यकताओं की पूर्ति के सब साधन शीघ्र ही मिल जाते हैं। उसे पाप के समूल नाश के लिए, पाप से लड़ने के लिए, जीवन–संघर्ष में विजयी होने के लिए जिस बल, तेज, सामर्थ्य की आवश्यकता है, वह भी ठीक समय पर मिल जाता है। इसके बाद उसे अन्तरिक्षलोक की वृष्टि, मानसिक लोक की दुर्लभ महान् सन्तुष्टि, आनन्द व तृप्ति प्राप्त हो जाती हैं और यह दिव्य वृष्टि ही नहीं, किन्तु इन दिव्य जलों की प्रेरक, इनको गति देनेवाली जो स्तुत्य जगद्वन्द्य दिव्य ज्योति है, वह आदित्य ज्योति भी अन्त में उन्हें मिल जाती है। इस प्रकार पार्थिव, आन्तरिक्ष और दिव्य (आत्मिक) एक–एक–एक ऊँचे ऐश्वर्य, सम्पूर्ण ऐश्वर्य, एक तेरा ही सेवन करते जानेवाले को पूरी तरह मिल जाते हैं। फिर भी हम मूर्ख न जाने क्यों, एक तेरे ही सेवन में नहीं लगते, एक तुझ मूल का आश्रय नहीं पकड़ते।

–: साभार :– वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

वैक्सीन मित्रता : भारत ने जीता दुनिया का दिल

हिन्दी फिल्म पूरब और पश्चिम में एक गीत की लाइन है कि 'जीते हों किसी ने देश तो क्या, हमने तो दिलों को जीता है'। संकट के इस दौर में जिस तरह से भारत ने पड़ोसी समेत कई देशों को मुफ्त वैक्सीन देकर मदद की है, उससे भारत ने दिल जीत लिया और पूरी दुनिया में भारत की जय जयकार हो रही है। लेकिन दुनिया को ब्याज पर पैसे बाँटने वाले चाइना को ये बात हजम नहीं हो रही है यानि भारत की वैक्सीन मित्रता के सामने चाइना बेबस नजर आ रहा है।

अब समस्या क्या है कि भारत मुफ्त में वैक्सीन भेज रहा है और चाइना कह रहा है जिसे वैक्सीन चाहिए वह आकर ले जाओ। उसने पाकिस्तान को स्पष्ट रूप से कहा था कि अपना विमान लाओ और यहां से वैक्सीन लेकर जाओ मतलब दोस्ती ठीक है पर हम एक पैसे का खर्चा नहीं करेंगे। दूसरा भारत ने नेपाल जैसे छोटे देश को दस लाख वैक्सीन भिजवाई वहां चाइना ने 21 करोड़ की आबादी वाले पाकिस्तान को सिर्फ 5 लाख वैक्सीन देने की बात कही है। मसलन साफ कहा कि कोई छोटा मोटा विमान ले आना ज्यादा माल नहीं मिलेगा।

हम इस वैक्सीन डिप्लोमेसी को केवल व्यंग्य तक न देखकर अगर सीरियस लें तो यह भारत की विदेश नीति का शानदार उदाहरण कहा जा सकता है। बीबीसी ने लिखा है कि आपका दोस्त कौन है और दुश्मन कौन है इसकी पहचान मुश्किल घड़ी में ही होती है। जब कोई देश अपनी विदेश नीति का इस्तेमाल दूसरे देशों में फैली बीमारी से लड़ने के लिए वैक्सीन भेज कर करता है तो उसे वैक्सीन डिप्लोमेसी कहते हैं। ये डिप्लोमेसी तब और कारगर साबित होती है जब दोनों देश इसका इस्तेमाल आपसी मतभेदों को भुला कर करते हैं। रूस और अमेरिका के बीच वैक्सीन डिप्लोमेसी का इस्तेमाल 1956 में शीत युद्ध के समय भी हुआ था। साल 1956 में रूसी वायरोलॉजिस्ट और अमेरिकी वायरोलॉजिस्ट आपसी मतभेदों को भुलाकर साथ आए थे और पोलियो के टीके को और बेहतर बनाने के लिए काम किया। बहुत कम अमेरिकी आज इस बात को जानते हैं कि अमेरिका में पोलियो के जिस टीके को इस्तेमाल की इजाजत मिली थी, उसका पहले लाखों रूसी बच्चों पर सफल परीक्षण किया गया था।

आज के दौर में ये शब्द एक बार फिर चलन में है। इस बार कोरोना वैक्सीन को लेकर इस शब्द का इस्तेमाल खूब हो रहा है और इस बार विश्वभर में भारत अपनी छाप छोड़ रहा है जब इससे दुनियाभर में भारत की वाह वाह होने लगी तो चीन ने भी अपनी वैक्सीन डिप्लोमेसी में बदलाव किया और पाकिस्तान के अलावा कुछ अन्य देशों को मुफ्त वैक्सीन देने का मन बनाया। पाकिस्तान को पांच लाख कोरोना वैक्सीन देने का वादा करने वाले चीन ने श्रीलंका को भी 3 लाख वैक्सीन मुफ्त में देने का वादा किया है। लेकिन भारत इस बार चाइना से कहीं आगे निकल गया क्योंकि जहाँ चाइना अपनी वैक्सीन बेचने की कोशिश में लगा था वहां वहां भारत ने वैक्सीन की पहली खेप मुफ्त में भिजवा दी। भूटान को डेढ़ लाख, मालदीव 1 लाख, नेपाल 10 लाख, बांग्लादेश को 20 लाख, म्यांमार 15 लाख, मॉरीशस 1 लाख, सेशेल्स 50 हजार, श्रीलंका 5 लाख, बहरीन को 1 लाख समेत ब्राजील और मोरक्को तक को वैक्सीन उपलब्ध करा चुका है। यानि करीब 55 लाख वैक्सीन इन देशों को भिजवा चुका है।

यहीं इसके बाद भी अगर देखें तो जहाँ अब चाइना की नजरें हैं वहां भी भारत ने करार कर लिया है आगे की आपूर्ति सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, कनाडा, मंगोलिया, आदि में होने की संभावना है। भारत ने अपने पड़ोसी देशों को पहली खेप मुफ्त में देने की बात की है। बाकी खेप के लिए पड़ोसी देशों को भारत से वैक्सीन खरीदनी होगी। कुछ मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक चीन कुछ देशों को वैक्सीन खरीदने के लिए लोन के तौर पर मदद की पेशकश भी कर रहा है।

....वैक्सीन डिप्लोमेसी को केवल व्यंग तक ना देखकर अगर सीरियस ले तो यह भारत की विदेश नीति का शानदार उदाहरण कहा जा सकता है। बीबीसी ने लिखा है कि आपका दोस्त कौन है और दुश्मन कौन है इसकी पहचान मुश्किल घड़ी में ही होती है। जब कोई देश अपनी विदेश नीति का इस्तेमाल दूसरे देशों में फैली बीमारी से लड़ने के लिए वैक्सीन भेज कर करता है तो उसे वैक्सीन डिप्लोमेसी कहते हैं। ये डिप्लोमेसी तब और कारगर साबित होती है जब दोनों देश इसका इस्तेमाल आपसी मतभेदों को भुला कर करते हैं, रूस और अमेरिका के बीच वैक्सीन डिप्लोमेसी का इस्तेमाल 1956 में शीत युद्ध के समय भी हुआ था। साल 1956 में रूसी वायरोलॉजिस्ट और अमेरिकी वायरोलॉजिस्ट आपसी मतभेदों को भुलाकर साथ आए थे और पोलियो के टीके को और बेहतर बनाने के लिए काम किया।....

हालाँकि यह भी तय है कि आज दुनिया के दूसरे देशों में इतनी बड़ी आबादी को कोरोना के टीके की जरूरत है कि वो भारत और चीन दोनों से टीका खरीद सकता है। साथ साथ यह बात भी सच है कि भारत को दुनिया का वैक्सीन हब कहा जाता है और चीन इस मामले में भारत से काफी पीछे है।

लेकिन चाहे वो चीन हो या फिर भारत दोनों देश कोरोना को तब तक नहीं हरा सकते जब तक पड़ोसी मुल्कों में भी इस बीमारी को खत्म न कर दिया जाए। मान लीजिए भारत में सबको टीका लग गया और बांग्लादेश और नेपाल में बीमारी फैलती रही, तो भारत कैसे सुरक्षित रह सकता है? दोनों देशों के नागरिकों का भारत में रोज का आना-जाना है। दोनों देशों के साथ हमारे सीमाएं बिलकुल खुली हैं। यानि अपने साथ साथ पड़ोसी को भी स्वस्थ करना पड़ेगा वरना महामारी का खतरा बना रहेगा।

इस कारण से भी भारत को पहले पड़ोसी इसके बाद दुनिया के दूसरे देशों की वैक्सीन से मदद करना जरूरी है ताकि खुद को एक जिम्मेदार ग्लोबल पावर के तौर पर स्थापित कर सके। यही है भारत के वैक्सीन डिप्लोमेसी का एक मात्र उद्देश्य। भारत अपने पड़ोसी देशों की मदद नहीं करता और अगर चीन करता है तो भारत की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर छवि खराब बनेगी। इस लिहाज से देखें तो भारत जरूर वैक्सीन डिप्लोमेसी का इस्तेमाल चीन को कांउटर करने के लिए कर रहा है। अपनी पूरी जनसंख्या को पहले टीका ना लगवा कर दोनों देश पड़ोसी मुल्कों की मदद के लिए हाथ आगे बढ़ रहे हैं लेकिन चाइना पीछे रह गया और भारत ने दिल जीत लिया। *– सम्पादक*

पड़ौसी देश म्यांमार (बर्मा) में सैन्य तख्तापलट

म्यांमार : क्या रोहिंग्या वापस आएंगे?

......'लोकतंत्र खतरे में है' ये जुमला आप अक्सर सुनते होंगे विपक्षी नेताओं की जुबान से। कभी बराक ओबामा को लोकतंत्र की फिक्र होती है। तो कभी टेरीजा में और एंजेला मर्केल लोकतंत्र बचाने की गुहार लगाती हैं। पूरी दुनिया में हंगामा सा है। लोकतंत्र खतरे में है। जम्हूरियत को बचाओ। आखरि लोकतंत्र क्यों खतरे में है? उसे किससे खतरा है? सीरिया में बशर अल असद की सरकार, जब अपने ही लोगों पर जुल्म करती है, तो लोकतंत्र को खतरा नहीं होता। चीन की सरकार जब हॉगकॉग जैसे स्वायत्त इलाके में दखल देती है, तो लोकतंत्र पर खतरा दिखाई नहीं देता। ईरान, इराक और रूस में जब साफ-सुथरे चुनाव नहीं होते, तो भी लोकतंत्र को नुकसान नहीं होता, जब अमरीका की जनता डोनाल्ड ट्रंप को राष्ट्रपति चुनती है, फिर डेमोक्रेसी को खतरा हो जाता है। जब ब्रिटेन के लोग यूरोपीय यूनियन से अलग होने यानी ब्रेक्जिट के हक में वोट देते हैं, तो उसे भी लोकतंत्र के लिए खतरा क्यों बताया जाता है? लेकिन भारत, अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांस जैसे सेकुलर देशों में अक्सर लोकतंत्र को खतरा हो जाता है। .....

ताकत नहीं बल्कि डर लोगों को भ्रष्ट करता है। ताकत खोने का डर उन लोगों को भ्रष्ट कर देता है जो इसे चलाने की कोशिश करते हैं और ताकत के अभिशाप का डर उनको भ्रष्ट कर देता है जो इसके अधीन होते हैं। ये शब्द म्यांमार की सर्वोच्च नेता आंग सान सू ची के हैं जो उसने नोबल पुरुस्कार लेते वक्त कहे थे।

लोकतंत्र खतरे में है। ये जुमला आप अक्सर सुनते होंगे विपक्षी नेताओं की जुबान से। कभी बराक ओबामा को लोकतंत्र की फिक्र होती है। तो कभी टेरीजा में और एंजेला मर्केल लोकतंत्र बचाने की गुहार लगाती हैं। पूरी दुनिया में हंगामा सा है। लोकतंत्र खतरे में है। जम्हूरियत को बचाओ। आखरि लोकतंत्र क्यों खतरे में है? उसे किससे खतरा है? सीरिया में बशर अल असद की सरकार, जब अपने ही लोगों पर जुल्म करती है, तो लोकतंत्र को खतरा नहीं होता। चीन की सरकार जब हाँगकाँग जैसे स्वायत्त इलाके में दखल देती है, तो लोकतंत्र पर खतरा दिखाई नहीं देता। ईरान, इराक और रूस में जब साफ-सुथरे चुनाव नहीं होते, तो भी लोकतंत्र को नुकसान नहीं होता, जब अमरीका की जनता डोनाल्ड ट्रंप को राष्ट्रपति चुनती है, फिर डेमोक्रेसी को खतरा हो जाता है। जब ब्रिटेन के लोग यूरोपीय यूनियन से अलग होने यानी ब्रेक्जिट के हक में वोट देते हैं, तो उसे भी लोकतंत्र के लिए खतरा क्यों बताया जाता है? लेकिन भारत, अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांस जैसे सेकुलर देशों में अक्सर लोकतंत्र को खतरा हो जाता है।

हाल ही में भारत के एक पडोसी देश म्यांमार सेना ने देश की सर्वोच्च नेता आंग सान सू ची समेत कई नेताओं को गिरफ्तार करने के बाद सत्ता अपने हाथ में ले ली है। अब देश में एक साल तक आपातकाल रहेगा। फिलहाल म्यांमार की राजधानी नेपीटाव और मुख्य शहर यंगून में सड़कों पर सैनिक मौजूद हैं। यानि म्यांमार में लोकतंत्र समाप्त हुआ सैनिक तानाशाही शुरू हो गयी।

यानि पूरी दुनिया में करीब 195 देशों पूरी तरह से लोकतांत्रिक कहे जाने वाले देशों की तादाद में अभी तक 19 देश थे जो अब घटकर 18 रह गये है। आईईयू की रिपोर्ट के मुताबिक सिर्फ दुनिया की कुल आबादी का 4.5 फीसद हिस्सा ही सही मायनों में लोकतांत्रिक माहौल में रह रहा है। अब सवाल है ये कि 177 देशों में किनकी सरकारें हैं और वहां लोकतंत्र कहो या वहां की जनता को खतरा क्यों नहीं होता? इसमें कुल मिलाकर देखा जाये तो 57 देशों में मुस्लिम हैं जहाँ लोकतंत्र के बजाय इस्लाम का राज्य है। लेकिन दुनिया का कोई वामपंथी कभी ये सवाल नहीं उठाता कि इन देशों में लोकतंत्र क्यों नहीं है और ये देश सेकुलर क्यों नहीं हैं?

दूसरा इसके बाद 38 देशों में लोकतंत्र के लिए थोड़े हालात बेहतर हुए हैं। बाकि अधिकांश देशों जहाँ जहाँ कम्युनिस्ट सरकारें हैं या कम्युनिस्ट विचारधारा से प्रेरित सरकारें हैं वहां-वहां भी लोकतंत्र नहीं है। सिर्फ तानशाही है। लेकिन कोई आवाज सुनाई नहीं देती कि इन देशों में लोकतंत्र क्यों नहीं है? अब जैसे ही म्यांमार में तख्ता पलट हुआ है कोई कम्युनिस्ट वहां के लोकतंत्र के लिए नहीं बोलेगा क्योंकि म्यांमार की सेना में भी कम्युनिज्म का प्रभाव है न आज विश्व भर किसी वामपंथी की आवाज सूची के पक्ष में सुनाई देगी।

आंग सान सू ची म्यांमार की आजादी के नायक रहे जनरल आंग सान की बेटी है। यूँ तो सूची का जन्म 19 जून 1945 को बर्मा के रंगून शहर में हुआ पर जब वह महज सिर्फ दो वर्ष की थी तभी उनके पिता की विपक्षी समूह ने हत्या कर दी थी।

जब सूची 15 वर्ष की थी, वर्ष 1960 में उनकी मां को भारत में बर्मा का राजदूत नियुक्त किया गया, तब सू ची भी अपनी मां के साथ भारत आ गई। बताया जाता यहाँ आकर सू ची संजय गाँधी और राजीव गाँधी के साथ खेली और बड़ी हुई। यहीं से उसने नई दिल्ली के लेडी श्री राम महाविद्यालय से 1964 में स्नातक की पढ़ाई की इसके बाद वे अपनी आगे की पढ़ाई के लिए ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय चली गई।

28 साल की सू ची ने भूटान के विदेशी मंत्रालय में रिसर्च ऑफिसर के रूप में काम किया उसी साल सूची डॉ. माइकल ऐरिस के साथ विवाह बंधन में बंध गई। लेकिन एक शर्त पर कि एक दिन बर्मा के लोगों को मेरी जरूरत होगी और उस दिन मुझे वापिस जाना होगा। देश के प्रति कर्तव्य की भावना मैंने अपने पिता से सीखी और माफ कर देने की भावना अपनी मां से। ये साल था 1988 सू ची की माँ बीमार हो गयी और मां की देखभाल करने के लिए रंगून वापिस लौट आई और इसी साल सूची ने लोकतंत्र के समर्थन में कई भाषण दिए। नतीजा उसे घर पर ही नजरबंद कर दिया गया। इसके बाद कई बार नजर बंदी हटाई गयी, लगाई गयी। लेकिन एक बड़ा त्याग और देशभक्ति की भावना सूची ने तब दिखाई जब 1999 में उनके पति माइकल ऐरिस इंग्लैंड में थे और सूची से मिलना चाहते थे लेकिन सूची ने साफ मना कर दिया क्योंकि अगर वे चली गई तब उनको वापिस म्यांमार में आने नहीं दिया जाएगा और उनका लोकतान्त्रिक बर्मा का सपना अधुरा रह जायेगा। खैर 2010 में नजरबंदी से उनकी रिहाई हुई।

अब बात रोहिंग्या और सू ची के कनेक्शन की 2015 के नवंबर महीने में सू ची के नेतृत्व में नेशनल लीग फॉर डेमोक्रेसी पार्टी ने एकतरफा चुनाव जीत लिया। ये म्यांमार के इतिहास में 25 सालों में हुआ पहला चुनाव था जिसमें लोगों ने खुलकर हिस्सा लिया। जैसे ही सू ची वहां मजबूत हुई इसके अगले साल म्यांमार से रोहिंग्या खदेड़े जाने लगे। पूरी दुनिया में उसकी काफी आलोचना हुई , लेकिन सू ची मौन रही और रोहिंग्या म्यांमार से बाहर फेंक दिए गये। बहुसंख्यक बौद्ध आबादी में वह काफी लोकप्रिय बन गयी।

बस इसी के बाद चाइना को छोड़कर बाकि कम्युनिस्ट कहो या वामपंथी सूची को एक विलेन की नजर से देखने लगे। 2017 में भारत और म्यांमार के बीच 11 अहम समझौतों पर हस्ताक्षर हुए यानि चाइना के खास मित्र को सू ची के सहयोग से भारत काफी अपनी और करने में सफल रहा। यह बात चाइना को नागवार गुजर रही थी, इस कारण सूची अब चाइना की भी कहीं न कहीं दुश्मन बन रही थी।

नतीजा आज सबके सामने है कि म्यांमार में लोकतंत्र समाप्त हुआ सैनिक तानाशाही शुरू हो गयी। अब इसके जवाब में दुनिया का कोई वामपंथी अपनी जुबान नहीं खोलेगा और म्यांमार को फिर उसी दिशा में ले जायेंगे जहाँ से सूची उसे निकालकर लाई थी क्योंकि लोकतंत्र को खतरा सिर्फ भारत, ब्रिटेन, अमेरिका और फ्रांस में होता है, म्यांमार में नहीं।

- राजीव चौधरी

प्रेरक प्रसंग — जब गुलबर्गा में आर्यों का अक्रमण हुआ

देश-विभाजन से पूर्व गुलबर्गा में एक ऐतिहासिक आर्य महासम्मेलन हुआ था। निजामी सरकार आर्यो का विराट् रूप देखकर थर्रा उठी। आर्यो पर आक्रमण करवाया गया। आर्यनेताओं को बुलाया गया। भाई वंशीलालजी ने पण्डित विनायक रावजी को कहा भी कि दाल में कुछ काला है। आप थाने में मत जाएँ। राव साहब ने भाईजी का सुझाव न माना। पण्डित नरेन्द्रजी, पण्डित गणपतशास्त्री आदि कलेक्टर के यहाँ पहुँचे तो वहाँ निजाम की पुलिस ने आर्यनेताओं की भरपेट पिटाई की। पण्डित नरेन्द्रजी की तो टाँग ही तोड़ दी गई।

जब इन नेताओं को कलेक्टर का सन्देश पहुँचा, उस समय श्री भाई वंशीलालजी ने इन्हें बार-बार रोका कि वहाँ न जाएँ। यह कोई षड्यन्त्र है। इधर ये तीन महापुरुष कलेक्टर के पास गये, उधर भाई वंशीलालजी ने साथियों से कहा कि चलो यहाँ से निकलकर शोलापुर की ओर चलें। निजाम राज्य की सीमा में रहना ठीक नहीं। पण्डाल से रेलवे स्टेशन बहुत दूर था। कैसे निकलें? मार्ग में मुसलमान देख लेंगे तो निहत्थे आर्य लोगों को मार देंगे।

भाईजी ने कहा- ''मुसलमानी पायजामा पहनकर निडरता से आर्य लोग मुसलमानी मुहल्लों से होते हुए स्टेशन पर पहुँच गये और वहाँ से अंग्रेजी इलाके में पहुँच गये। यह घटना मुझे भाईजी के साथ गुलबर्गा से निकलनेवाले एक आर्यवीर ने बताई थी और यह भी कहा कि यदि हम यहाँ से न निकलते तो भाईजी पकड़े जाते और हमारी भी पिटाई होती।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी* : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

दिल्ली में स्थान-स्थान पर हो रहें हैं यज्ञ, भजन, प्रवचन एवं वस्त्र वितरण के कार्यक्रम

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत कार्यरत वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प के माध्यम स्थान स्थान पर यज्ञ, घर-घर यज्ञ-हर घर यज्ञ, भजन, प्रवचन के कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इस अवसर स्व. महाशय धर्मपाल जी की प्रेरणा से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा ईकाई अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के सेवा प्रकल्प ''सहयोग'' द्वारा वस्त्रों की आधारभूत आवश्यकता की पूर्ति हेतु वस्त्रों व शिक्षा हेतु किताबों, खिलोनों का वितरण किया जा रहा है। प्रान्तीय स्तर पर दिल्ली में सहयोग का कार्य दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत किया जा रहा है।

इसके अन्तर्गत 28 जनवरी को नंगली डेरी, नजफगढ़, दिल्ली में, दिनांक 30 जनवरी, 2021 को जे. जे. कॉलोनी, मायापुरी तथा दिनांक 31 जनवरी को दयानन्द विहार पार्क, दयानन्द विहार, दिल्ली में यज्ञ, भजन, प्रवचन के कार्यक्रम आयोजित किए गए।

यज्ञ करने से पर्यावरण को होने वाले लाभों से कोई अनभिज्ञ नहीं है इसलिए वायु को शुद्ध करने हेतु यज्ञों का आयोजन किया। इन यज्ञों में क्षेत्र की महिलाओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। दयानन्द विहार में आयोजित कार्यक्रम में विधायक श्री ओमप्रकाश शर्मा, निगम पार्षद श्रीमती बबिता खन्ना ने भाग लिया। कार्यक्रम के उपरान्त समस्त उपस्थितों एवं जरुरतमन्द परिवारों एंव बच्चों को वस्त्रों का वितरण किया गया।

आपका योगदान - 'सहयोग' के माध्यम से आप इस सेवा का हिस्सा बन सकते हैं। आपके घर में बहुत-सा ऐसा सामान होता है जो आपके काम नहीं आता है किन्तु किसी अन्य के लिए वह बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। आप वह सामान हमें दें, हम उसे हर जरूरतमंदों तक पहुँचाएंगे।

आप हमें 'वस्त्र, पुस्तकें, खिलौने, जूतें, चप्पल, आदि' सामान दे सकते हैं। आप सामान एकत्र करके सहयोग टीम को 9540050322 पर कॉल करें। हमारी गाड़ी आपके घर से सामान लेकर आएगी। आप अपना सहयोग हमारे कार्यालय आकर भी दें सकते हैं। कार्यालय पता है-

आर्य समाज मन्दिर,
डी.सी.एम. रेलवे कोलोनी,
निकट फिल्मिस्तान,
दिल्ली-110007

नंगली डेरी, नजफगढ़, दिल्ली

जे. जे. कॉलोनी, मायापुरी, नई दिल्ली

दयानन्द विहार पार्क, दयानन्द विहार, दिल्ली

बाल बोध

आदर्श विद्यार्थी के गुण

गतांक से आगे -

बाह्य साज-सज्जा फैशनेबल वस्त्र आदि के चक्कर में न पड़कर विद्यार्थी को सद्‌गुणों को धारण करने व शरीर को बलिष्ठ तथा स्वस्थ रखने का प्रयास करना चाहिए। आन्तरिक गुणों की सौरभ व सदाचरण की आभा से दमकता मुख-मण्डल वास्तविक सौन्दर्य है।

सुन्दरता पर कभी न फूलो
शाप बनेगी वह जीवन में
लक्ष्य विमुख कर भटकाएगी
तुम्हें व्यर्थ के आडम्बर में।

फैशनपरस्ती में मन के विचार कलुषित होकर लक्ष्य भ्रष्ट कर देते हैं। पाठ्योत्तर क्रियाओं में सक्रिय भाग लेकर सामाजिक विकास भी विद्यार्थी के व्यक्तित्व के निखार में सहयोगी होता है।

साहित्यिक, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेकर भाषण, वादविवाद, कविता, गीत-संगीत, नृत्य, अभिनय द्वारा अन्तर्निहित शक्तियों का विकास करके प्राप्त प्रशंसा व सम्मान से आत्मविश्वास में अभिवृद्धि तथा आनन्द प्राप्ति विद्यार्थी के जीवन को उत्कर्ष की ओर अग्रसर करती है। गर्ल गाइडिंग स्काउटिंग, खेलकूद, मैच, समाज-सेवा, श्रमदान आदि में विद्यार्थियों को बढ़ चढ़कर भाग लेना चाहिए। इससे उनमें नेतृत्व, वक्तृत्व की कलाएं विकसित होंगी-जो भावी जीवन के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होंगी।

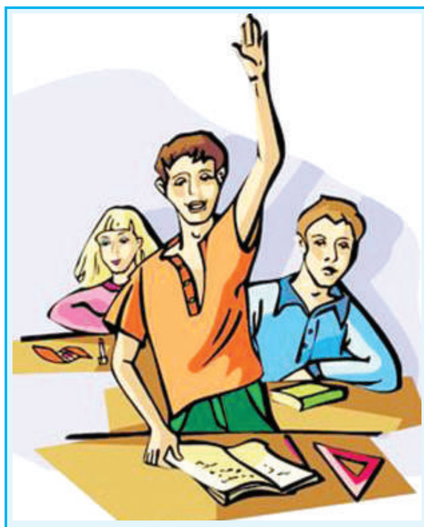

......विद्याध्ययन का कार्य निर्बाध गति से चलता रहे, यही विद्यार्थी का प्रथम कर्त्तव्य है। विद्यार्थी विद्या के निमित्त स्वयं को समर्पित समझे। एकाग्रचित्त होकर अधिकाधिक अंक प्राप्ति के लिए निरन्तर स्वाध्याय करें। राजनीतिज्ञों, नव धनाढ्यों, तस्करों असामाजिक तत्त्वों से दूर ही रहे, इसी में उसका हित है। प्रदर्शनों, हड़तालों, नारेबाजी, तोड़फोड़ से अपने को अलग रखें। अपने सहपाठियों में जातिवाद, वर्गवाद, प्रान्तवाद तथा साम्प्रदाय वाद की दुर्गन्ध को न फैलने दें। भाईचारे की सुगन्ध से परिवेश को खुशहाल बनाएं।......

दायित्व : भारत की आन्तरिक स्थिति वर्तमान में विचारणीय है और विश्व का वातावरण भी इसके प्रतिकूल है। यहां कानून और व्यवस्था चौराहे पर औंधे मुंह पड़े सिसक रही है। सारे देश में हिंसा, तनाव एवं आतंक का साम्राज्य है। साम्प्रदायिक एवं विघटनकारी शक्तियां देश के लिए खतरा पैदा कर रही हैं। मंहगाई की मार इतनी जबरदस्त है कि वह भारतीय जीवन को नंगा-भूखा बनाने पर तुली है। राष्ट्रीय दल स्वार्थ के पंक से उबर नहीं पाते।

अर्थतन्त्र चरमरा रहा है। राष्ट्रीय चरित्र तथा नैतिक मूल्य कहीं पाताल में छुपे बैठे हैं। इन विषम परिस्थितियों में विद्यार्थी का कर्त्तव्य क्या हो सकता है?

विद्याध्ययन का कार्य निर्बाध गति से चलता रहे, यही विद्यार्थी का प्रथम कर्त्तव्य है। विद्यार्थी विद्या के निमित्त स्वयं को समर्पित समझे। एकाग्रचित्त होकर अधिक से अधिक अंक प्राप्ति के लिए निरन्तर स्वाध्याय करें। राजनीतिज्ञों, नव धनाढ्यों, तस्करों असामाजिक तत्त्वों से दूर ही रहें, इसी में उनका हित है। प्रदर्शनों, हड़तालों, नारेबाजी, तोड़फोड़ से अपने को अलग रखें। अपने सहपाठियों में जातिवाद, वर्गवाद, प्रान्तवाद तथा साम्प्रदाय वाद की दुर्गन्ध को न फैलने दें। भाईचारे की सुगन्ध से परिवेश को खुशहाल बनाएं।

विद्यार्थी अपनी 'आत्मशक्ति की पहचान' बढ़ाकर राष्ट्रनिर्माण के पुण्यकार्य में जुड़े। महादेवी वर्मा विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहती हैं- **"यदि आप अपनी सारी शक्तियों (शारीरिक, आत्मिक) को, अपनी आस्था को, अपने विश्वास को अपने में समेट लें और देखें तो पायेंगे कि आपके पास वो शक्ति है जिससे प्रलय के बादल छंट जाएंगे। मार्ग की जितनी बाधाएं हैं-वे हट जाएंगी।"** इसलिए अपने अन्दर शैक्षणिक योग्यता, राष्ट्रप्रेम, आत्मशक्ति, जीवन मूल्यों में आस्था, सौन्दर्यबोध से प्रेम तथा सामाजिक कृत्यों द्वारा राष्ट्रनिर्माण के पुण्यकार्य में विद्यार्थी अपनी भूमिका निभा सकता है।

देश के छात्र स्वस्थ हों, सुन्दर हों, उदार हों, सन्तुलित बुद्धि वाले हों, सुशिक्षित तथा उत्साहित हों तो वे परिवार, समाज तथा देश का कौन-सा संकट दूर नहीं कर सकते? वे अपने कार्यों से भविष्य के खेतों में ऐसे फल-फूल उगा सकते हैं-जो आगामी सदियों तक राष्ट्र के जीवन को स्वस्थ, सुन्दर और सुवासित बनाए रखेंगे।

किसान आन्दोलन से आ रही षड्यन्त्र की गंध – विदेशी गहरी साजिश की आशंका

कृषि प्रधान भारत राष्ट्र में किसानों द्वारा आन्दोलन करना एक पुरानी परंपरा रही है। भारत की आजादी से पहले किसानों ने अपनी मांगों के समर्थन में जो आन्दोलन किए वे राष्ट्रभक्ति, सेवा और समर्पण के कारण हिंसा और बर्बादी से भरे नहीं होते थे। लेकिन आज जब देश को आजाद हुए सात दसक से भी ज्यादा समय बीत चुका है तब किसानों के नाम पर हिंसक और राजनीतिक से प्रेरित आन्दोलन करना अत्यंत निराशाजनक है। देश में नील पैदा करने वाले किसानों का आन्दोलन, पाबना विद्रोह, तेभागा आन्दोलन, चंपारण का सत्याग्रह और बारदोली में जो आन्दोलन हुए थे उनका नेतृत्व सरदार वल्लभभाई पटेल और महात्मा गांधी जैसे महापुरुषों ने किया था। आर्य समाज एक स्वयं आन्दोलनकारी संगठन है। जो समय-समय पर सामाजिक असमानता, सामाजिक कुरीतियां और दुर्गुण दुव्यसनों के खिलाफ समाज में जागृति पैदा करने के लिए आन्दोलन करता आया है। आन्दोलन करना बुरा नहीं है। लेकिन इस किसान आन्दोलन के पीछे जो देश की एकता और अखंडता के प्रति दुर्भावना से जो षड्यंत्र रचे गए हैं उनका आर्य समाज पुरजोर विरोध करता है।

पिछले दो महीनों से ज्यादा समय से चल रहे तथाकथित किसान आन्दोलन से एक देशद्रोही षड्यंत्र की गंध आ रही है। इस आन्दोलन को कुछ राजनीतिक पार्टियां हवा दे रही हैं और इस आन्दोलन में विदेशी फंडिग की जांच एन.आई.ए के अलावा अन्य ऐजेंसियां भी कर रही हैं। वितीय स्रोत खंगालने के लिए अन्य देशों की ऐजेंसियों से भी सम्पर्क साधा जा रहा है। देश के भीतर व बाहर इसके स्रोत तलाश्ने के लिए एन.आई.ए, ई.डी, आई.टी सहित अन्य सम्बन्धित ऐजेंसियों का समन्वय बना हुआ है। कुछ ऐजेंसियों का मानना है कि इस किसान आन्दोलन में सिक्ख फॉर जस्टिस, खालिस्तान जिन्दाबाद फोर्स, बब्बर खालसा इंटरनेशनल और खालिस्तान टाइगर फोर्स जैसे अलगाववादी संगठन आर्थिक मदद कर रहे हैं। इसको लेकर 15 दिसम्बर 2020 को गृह मंत्रालय की शिकायत पर एक एफ.आई.आर भी दर्ज की गई है। इस एफ.आई.आर में कहा गया है कि सिक्ख फॉर जस्टिस और दूसरे खालिस्तानी आंतकी संगठन इस साजिश में शामिल हैं। वे अपना मुखोटा किसान संगठनों के मुंह पर लगाकर भारत में डर, अराजकता और असंतोष की स्थिति पैदा करने की साजिश कर रहे हैं। तथाकथित किसानों के रूप में भारत सरकार के खिलाफ विद्रोह के लिए उन्हें भड़का रहे हैं।

.....आर्य समाज सदैव किसानों का सम्मान करता आया है लेकिन वास्तव में उन किसानों का जो सच में किसान हैं। ऐसे किसान नेताओं के प्रति आर्य समाज की कोई सहानुभूति नहीं है। जो खलनायक बनकर महान राष्ट्रीय पर्व गणतन्त्र दिवस जैसे अवसर पर देश की आन-बान और शान के खिलाफ उपद्रव करें, देश की पुलिस फोर्स पर जानलेवा हमला करें, तिरंगे झण्डे का अपमान करें, देश की सम्पत्ति को नष्ट करें, देश के विरुद्ध नारेबाजी करें, ऐसे लोगों का आर्य समाज पूरा विरोध करता है, उनकी निंदा करता है और भर्त्सना करता है। साथ ही भारत सरकार से यह अनुरोध करता है कि देश विरोधी तथाकथित नेताओं को और जो विदेशों में बैठकर भारत के खिलाफ आग उगल रहे हैं ऐसे अराजक तत्वों को सबक सिखाये।......

26 जनवरी, 2021 जब पूरा देश अपना 72वां गणतन्त्र दिवस हर्षोल्लास से मना रहा था तभी इस किसान आन्दोलन ने ट्रैक्टर रैली की आड़ में जो उत्पात मचाया उसको सारे देश और दुनिया ने अपनी आंखों से देखा है। ऐसा कलंकित उपद्रव अपने आप हो गया हो ऐसा नहीं है। इसके पीछे एक सोची समझी साजिश नजर आती है। किसानों ने या किसानों के नाम पर उपद्रवियों ने अपनी मनमानी चलाई। पुलिस वालों के ऊपर जानलेवा प्रहार किए, तलवार और लाठियां चलाई जिसके परिणामस्वरूप सैकड़ों पुलिस कर्मी घायल हुए और अस्पतालों में भर्ती हुए। मीडिया जगत में सारी घटना लाइव दिखाई। देश की आन-बान और शान तिरंगे झण्डे का अपमान कर एक वर्ग विशेष ने लालकिले की प्राचीर पर एक पंथ का झण्डा फहराया। देश की सम्पत्ति का नुकसान किया और किसान नेताओं ने केवल अफसोस जाहिर किया और कह दिया कि कुछ असामाजिक तत्व किसानों की भीड़ में घुस गए, इतना कहना क्या पर्याप्त है? और आज जब पुलिस उन अपराधियों पर कानूनी कार्यवाही कर रही है, उन्हें जेल भेज रही है, तो किसान नेता विरोध कर रहे हैं। देश में चक्का जाम करने की बात कह रहे हैं। इससे भी आगे 26 जनवरी के उपद्रव को लेकर उस समय यही लोग कह रहे थे कि पुलिस प्रशासन ने लालकिले की सुरक्षा क्यों नहीं की। अब जब पुलिस प्रशासन ने दिल्ली के तीनों बॉर्डरों पर सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए हैं तो किसान नेता फिर इसका विरोध कर रहे हैं। इससे पता चलता है कि इनकी नीयत, लक्ष्य और उद्देश्य देश के प्रति अच्छा नहीं है क्योंकि 26 जनवरी को भी पुलिस प्रशासन तो उन शर्तों पर जो किसानों के साथ में ट्रेक्टर रेली को लेकर जो समझौता हुआ था उस पर टिके रहे लेकिन उपद्रवियों ने बिना कुछ सोच-समझें इतना सब कर दिया जिसकी किसी को उम्मीद नहीं थी। हालांकि बाद में दिल्ली पुलिस द्वारा जब किसान नेताओं के खिलाफ मुकदमें दायर किए गए और अब लुक आउट नोटिस भी जारी किया गया तथा 20 किसान नेताओं को अपने पासपोर्ट जमा करवाने के लिए भी कहा गया तो किसान नेता रोने लगे और कई किसान संगठनों ने अपने आपको इस आन्दोलन से अलग भी कर लिया। लेकिन क्या इस सबसे भारत देश की विश्व पटल पर जो बेइज्जती हुई है क्या वो वापिस आ सकती थी?

जो किसान नेता पिछले दो महीने से सीना ठोक-ठोक कर कह रहे थे कि जब तक सरकार तीनों कानून वापिस नहीं लेगी तब तक हम दिल्ली की सड़कों से नहीं हटेंगे। फिर क्या कारण है कि अब उनके तम्बू उखड़ने लगे? जो मूछों को ताव दे-देकर कह रहे थे कि 1 फरवरी को संसद का घेराव करेंगे वह अपनी घोषणा से कैसे पलट गए? जो बार-बार पूरे देश का नेतृत्व करने का दम भरते थे वे क्यों घर-घराकर रोने लगे?

- शेष पृष्ठ 7 पर

प्रयाग में वैदिक धर्म प्रचार शिविर

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के तत्त्वावधान में तथा जिला आर्य प्रतिनिधि सभा प्रयाग के संयोजकत्व में काली सड़क पर वैदिक धर्म प्रचार शिविर में श्री मदन शर्मा एवं सुनीता शर्मा के यजमानत्व में वैदिक महायज्ञ का आयोजन किया गया। जिसके पुरोहित राधेश्याम आर्य थे। इसके पश्चात श्री पंकज जायसवाल उप मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अध्यक्षता में जिला आर्य प्रतिनिधि सभा प्रयागराज की एक बैठक का आयोजन हुआ जिसमें शिविर की आगे की गतिविधि के बारे में विचार विमर्श किया गया। इसमें श्री रविन्द्र जायसवाल, श्री पी एन मिश्र, श्री अरुणेश जायसवाल, श्री प्रेम प्रकाश कुलश्रेष्ठ (कोषाध्यक्ष), श्री अभिषेक यादव, श्रीमती रंजना सोभति, एवं श्री संजय सिंह (सहायक प्रशासक) ने अपने विचार व्यक्त किये। इस महायज्ञ में आर्य समाज चौक, आर्य समाज कटरा, आर्य समाज कल्याणी देवी, आर्य समाज रानी मंडी, आर्य समाज खुल्दाबाद, आर्य समाज मुंडेरा तथा आर्य समाज नैनी के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

– मदन शर्मा, आर्यसमाज चौक प्रयाग

आर्य समाज का वैदिक सत्संग आयोजित

संदेश न्यूज। कोटा. महर्षि दयानंद सरस्वती सेवा समिति कोटा के तत्वावधान में आर्य समाज के वैदिक सत्संग का आयोजन किया गया जिसमें वैदिक सिद्धांतों की जानकारी दी गई। मंत्री राकेश चड्ढा ने बताया कि विज्ञान नगर में आर्य समाज के वैदिक सत्संग का आयोजन निज आवास पर किया गया, जिसमें अंतरराष्ट्रीय वैदिक विद्वान डॉ. विनय विद्यालंकार ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि मनुष्य अन्य प्राणियों की अपेक्षा विशेष श्रेष्ठ है। वेद कहते हैं कि उसे मनुष्य बन कर देव बनना है और देव से पुरुषोत्तम बनना है। कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य उप प्रतिनिधि सभा कोटा के प्रधान अर्जुन देव चड्ढा ने की तथा कार्यक्रम का संचालन महामंत्री अरविंद पांडे ने किया। अंत में शांति पाठ एवं ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

Makers of the Arya Samaj : Pt. Guru Dutt ji

Continue From Last issue

It is, however, a pity that Pt. Guru Dutt did not pay much attention to his health. Nature had given him god physical powers, but he did not pay proper attention to them. He was so irregular in his habits that he soon fell a prey to consumption. This caused his death at a very early age.'

The greatest service that Pt. Guru Dutt did to the Arya Samaj was to create an interest in the study ofthe Vedas.It was his beliefthat only by studying the Vedas could India become great. It is to be regretted that since his death the Arya Samaj has not been paying as much attention to this matter as it deserves.

SOME SALIENT FEATURES OF GURU DUTI"S LIFE

To start with, his name GURU DUTT has an interesting background. At first, his name was MULA, Later, his guru called him VAIRAGI. Both these names have spiritual linkage. MULA is derived from MOOL which means, the base, the origin VAIRAGI indicates non-attachment or disinterest in worldly temptations etc. After a couple of years, his name was changed to *GURAN DITTA,* which means, given by or the gift of the guru. This name was further modi fied as *GURU DUTT,* which also means the same thing, as the previous name, but is its refined version. This name stick to him throughout life.

....To start with, his name GURU DUTT has an interesting background. At first, his name was MULA, Later, his guru called him VAIRAGI. Both these names have spiritual linkage. MULA is derived from MOOL which means, the base, the origin VAIRAGI indicates non-attachment or disinterest in worldly temptations etc. After a couple of years, his name was changed to GURAN DITTA, which means, given by or the gift of the guru. This name was further modi fied as GURU DUTT, which also means the same thing, as the previous name, but is its refined version. This name stick to him throughout life. ....

As he grew up, two more adjuncts were added to his name. These were *PANDIT* and *VIDYARATHI.* With the passage oftime, as he acquired considerable knowledge, he was called PANDIT which means a man of great knowledge. In all humility, he called himself VIDYARATHI which means a student. Thus in full measure he was known as *PANDITGURU DUIT VIDYARATHI.* Thus he was a gift ofthe gave, a man of great knowledge and wisdom and still a student, a learner ever.

From his very childhood, he had a spiritual up bringing. His father kept him away from evil company and gave him right training and education at home. He was also given right food and proper exercise. He drank lot of milk and did not like meat and would not talent even when his father insisted. Thus, he grew up into fine boy with spiritual leanings.

Guru Dutt was a quick learner. Besides his text books, he read lot of other books, he read lot of other books which awakened spirituality in him. He also learnt how to control breath. This was the start of his spiritual life.

Besides being a voracious reader, he learnt several languages which included urdu, Persian, Hindi, Sanskrit and English. He improved everybody with his knowledge. He had a wonderful memory. As a result of some reading, he professed atheism for sometime. But he developed firm faith in God, as he came under the influence ofArya Samaj.

Guru Dutt had the advantage of the company of Mahatma Hans Raj, Lajpat Rai, and some more good people who became very famous in their life. While in college, his classmates and professors likedhim very much and they admired him as an extraordinary youngman. He imposed all with his ability and good conduct.

When Swami Dayanand, the founder of Arya Samaj fell ill seriously, Guru Dutt went to Ajmer and served swamiji with great devotion of a worthy son. He was with swamiji at the time of his death.

This proved to be a turning point of his life when he imbibed from faith in God and resolved to work for Arya Samaj.

Guru Dutt was an untiring worker. He kept busy from morning till evening and never wasted time. He gave active support for the establishment of D.A.V. College and played a great role for the work of Arya Samaj and Provincial Representative Assembly. His devotion and dedication for the work of Arya Samaj was marvellous indeed. He read a lot he wrote a lot he travelled a lot, he lectured a lot and worked a lot to spread the message of Arya Samaj. In fact he sacrificed greater part of his short lived life for Arya Samaj.

Guru Dutt was a very impressive speaker. He was backed by great moral courage and fearlessness. He spoke with great intensity, enthusiasm, conviction, honesty and faith. People listened to him with great respect and undivided attention. He could deliver lectures in Hindi, Urdu, Sanskrit and English as well.

As Guru Dutt was a person of great ability, integrity learning and knowledge, he could have easily got a lucrative job in Govt. service. He could also adopt some other popular profession. But he did not do-so. Hedid not care for wealth, name and fame, status etc. He devoted his life for the service of society and mankind. This was indeed an act of great sacrifice.

Guru Dutt was a person of great character. He was honest, straight forward, truthful, patriotic, spiritual and much more. His mind was pure and thoughts noble and conduct exceptional. Above all, he practised what he preached to others. He was against all sorts offalsehood. He was prepare to sacrifice his own life and future for the good of country. He put great emphasis upon Brahmacharya which he practised himself.

Guru Dutt wanted to he a *yogi.* He showed great interest in learning yoga and tried to learn about it from all possible sources. He was found ofmeetting sadhus and attending meetings, lectures and read books in order to acquire knowledge of yoga. Unfortunately, he could not fulfil his wishoecause of his other activities and engagements.

He was a proficient *writer* as well. Inspite ofhis very busy life. He found time to write many books. He wrote a large number of articles in English weekly AryaPatrika. In his writings he explained the wisdom ofthe Vedas and the Upanishad.

Guru Dutt possessed a simple, loving nature and a pleasing behaviour. He showered love and affection on his colleagues and companions. He did not believe in formalities and that is why lot of visitors came to his house to meet and listen to him. He never felt any false pride in his ability and honour given to him by his admirers. He was never aggressive. At his young age, he was very fond of exercise and walking. He was also interested in gymnastics and cricket. He was fond of cleanliness and took bath with cold water, twice daily. He had great power of endurance and heat, cold did not bother him. In his childhood he possessed a robust health which deteriorated later on.

With so many qual ities of head and heart, Guru Dutt was indeed an extraordinary personal ity. However as the sun the source of brightest light also gets eclipsed and comes under darkness the shining life of Guru Dutt was also darkened by some drawbacks. He was very irregular in some of his habits. He had fixed time for doing some things. He had no fixed time for taking food, doing exercise and even for sleep. He was also very careless about his food. Once he continued taking milk and biscuits for two months. He was also careless about his dress. He wore clothes only for the protection of his body and never for show. Some people thoughts that this dress was classy but this did not bother him. The most of all, he did not pay much attention to his health needs. In his search for yoga, he began to practise several austerities. In these circumstances, his health began to deteriorate and he suffered from bad cold and attacks of coughing besides fever. In spite of his continuing ill health, he spent much time to serve the came of Arya Samaj, ever at the cost ofhis health. After sometime he fell seriously ill and fell a victim to a nasty incurable disease, which took his life.

Guru Dutt died at the young age of 26. His brieflife and its multifarious activities indicate that he had determined to dedicate his life for the service of humanity. The means that he adopted to fulfil this' noble cause, was the spread of pure knowledge ofVedas. He laid great emphasis upon the correct interpretation ofVedic knowledge and its effective propagation. While working for Arya Samaj, his mission was to create an interest in the study of the Vedas in order to receive the ancient glory ofIndia. This was his greatest services to the AryaSamaj.

It is indeed extremely sad and most unfortunate that an extraordinary gifted young man lost his life at such a young age. Someone has rightly said that *'Excepting swami Dayanand, no member of the Arya Samaj has been* so *able and learned as Pt. Guru Dutt Vidyarthy.* 'This is perhaps the greatest tribute paid to him who was one of the rarest among that leaders of Arya Samaj.

To be continued......

With thanks By: "Makers of Arya Samaj"

संस्कृत वाक्य प्रबोध

नामनिवासस्थान प्रकरणम्

संस्कृत	हिन्दी
30. तव किन्नामास्ति?	तेरा क्या नाम है?
31. देवदत्तः।	देवदत्त।
32. कोऽभिजनो युवयोर्वर्त्तते?	तुम दोनों का अभिजनदेश कौन है?
33. कुरुक्षेत्रम्।	कुरुक्षेत्र।
34. युष्माकं जन्मदेशः को विद्यते?	तुम्हारा जन्मदेश कौन है?
35. पञ्चालाः।	पंजाब।
36. भवन्तः कुत्रत्याः?	आप कहां के हो?
37. वयं दाक्षिणात्याः स्मः।	हम दक्षिणी हैं।
38. तत्र का पूर्वः?	वहां आपके निवास की कौन नगरी है?
39. मुम्बापुरी।	मुम्बई।
40. इमे क्व निवसन्ति?	ये लोग कहां रहते हैं?
41. नेपाले।	नेपाल में।
42. अयं किमधीते?	यह क्या पढ़ता है?
43. व्याकरणम्।	व्याकरण को।
44. त्वया किमधीतम्?	तूने क्या पढ़ा है?
45. न्यायशास्त्रम्।	न्यायशास्त्र।
46. भवता किं पठितमस्ति?	आपने क्या पढ़ा है?
47. पूर्वमीमांसाशास्त्रम्।	पूर्वमीमांसाशास्त्र।
48. अयं भवदीयश्छात्रः किं प्रचर्चयति?	यह आपका विद्यार्थी क्या पढ़ता है?
49. ऋग्वेदम्।	ऋग्वेद को।
50. त्वं कुत्र गच्छसि?	तू कहां जाता है?
51. पाठाय व्रजामि।	पढ़ने के लिए जाता हूं।

क्रमशः - साभार :- संस्कृत वाक्य प्रबोध (प्रकाशित-दिल्ली संस्कृत अकादमी)

गतांक से आगे -

स्वप्न : साधक या बाधक

- डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती

स्वप्न अच्छे या बुरे दोनों प्रकार से आते हैं। कई बार ऐसे अच्छे स्वप्न आते हैं कि उन्हें देखते रहने का ही मन करता है और निद्रा वृत्ति भी बनी रहती है। इसे सात्विक वृत्ति के स्वप्न कह सकते हैं। कई बार भविष्य में होने वाली घटनाओं के भी स्वप्न दिखाई देते हैं जिनका ज्ञान प्राप्त कर व्यक्ति इनसे लाभान्वित भी हो सकता है। अथवा किसी सम्भावित दुर्घटना से सावधानी भी रखी जा सकती है। कुछ स्वप्न काल्पनिक भी होते हैं जिनमें मन चित्त में संचित संस्कारों से 'कहीं की ईट कहीं का रोड़ा भानमती ने कुनबा जोड़ा' की भाँति अनेक विध कल्पनाओं का महल बनाता है। अनेक बार ऐसे भी स्वप्न आते हैं जिनका सम्बन्ध इस जीवन से न होकर पूर्व जन्म-जन्मान्तर के संस्कारों से होता है। स्वप्नों का संसार इतना विचित्र है कि उनका पूरा विश्लेषण किया जाना सम्भव नहीं है।

बुरे स्वप्नों से बचने के उपाय-

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि स्वप्न हमारे आन्तरिक जगत् का चित्रण करते हैं। वासनाओं से चित्रित मन स्वप्नावस्था में भी अनेक विध पापाचरण करता है। इनसे बचने का उपाय अथर्ववेद में इस प्रकार बतलाया है।

पर्यावर्ते दुःष्वप्न्यात् पापात् स्वप्न्यादमूल्या।
ब्रह्मान्तरं कृण्वे परा स्वप्नमुखाः शुचः।।

- अथर्व० 7/100/1

ब्रह्म अर्थात् ईश्वर को सुरक्षा कवच बना लेना चाहिये। इस विषय में महर्षि स्वामी दयानन्द जी के विचार चिन्तनीय हैं- 'जितेन्द्रिय बनने के अभिलाषी को रात दिन प्रणव ओ३म का जाप करना चाहिये। रात्रि को बिस्तर पर आसन जमा ओंकार का जप अथवा गायत्री का जप करते रहें। जब निद्रा आने लगे तो सो जायें। जब निद्रा खुल जाये तो उठ बैठें और प्रणव का जप आरम्भ कर दें। बहुत सोने से स्वप्न भी अधिक आते हैं। ये जितेन्द्रिय जन के लिये अनिष्ट हैं।'

...रात्रि में भोजन सोने से दो तीन घण्टे पहले कर लेना स्वास्थ्य के लिये लाभदायक है। टी.वी. मोबाईल आदि सोने से एक घण्टा पहले बन्द कर देने चाहिये। इनका नीला प्रकाश आंखों को विश्राम नहीं करने देता। सोने से पहले मल-मूत्र की प्रवृत्ति से निवृत्त हो लेना अच्छा है जिससे निद्रा बाधित न हो। अधिक गर्मी, अशान्त वातावरण, बन्द मकान, तेज प्रकाश मानसिक चिन्ता आदि निद्रा में बाधक हैं।.....

गाढ़ निद्रा आने से पहले अवचेतन मन (Sub conscious mind) सक्रिय रहता है। उस समय उसे जैसा आदेश दिया जाये वह रात्रि भर उसी की आवृत्ति करता रहता है। जब कभी हमें प्रातःकाल उठकर किसी आवश्यक कार्य के लिये जाना होता है तो निद्रा समय से पहले ही खुल जाती है। निद्रावस्था में भी मस्तिष्क के कई केन्द्र आपातकालीन चिकित्सालय की भाँति सक्रिय बने रहते हैं। उस अवस्था में उन्हें जैसा निर्देश दिया जायेगा सूक्ष्म शरीर उसी की पुनरावृत्ति करता रहेगा।

ब्रह्मचर्य रक्षा के लिये यह विधि बहुत ही उपयोगी है। रात्रि में भोजन सोने से दो तीन घण्टे पहले कर लेना स्वास्थ्य के लिये लाभदायक है। टी.वी. मोबाईल आदि सोने से एक घण्टा पहले बन्द कर देने चाहिये। इनका नीला प्रकाश आंखों को विश्राम नहीं करने देता। सोने से पहले मल-मूत्र की प्रवृत्ति से निवृत्त हो लेना अच्छा है जिससे निद्रा बाधित न हो। अधिक गर्मी, अशान्त वातावरण, बन्द मकान, तेज प्रकाश मानसिक चिन्ता आदि निद्रा में बाधक हैं।

दिन में सोना, शारीरिक श्रम या व्यायाम न करना रात्रि में अधिक देर तक जागना आदि से भी गाढ़ निद्रा नहीं आती। सोते समय सिरहाना पूर्व या दक्षिण दिशा में रखना चाहिये। उत्तर दिशा में सिर करके सोने से भयंकर और डरावने स्वप्न आते हैं।

जो आपके जीवन का उद्देश्य है उसी का चिन्तन करते हुये सो जायें तो आप देखेंगे कि धीरे-धीरे वह लक्ष्य तुम्हारे निकट आ रहा है। इसमें हेतु यह है कि आपने सूक्ष्म शरीर को अपना उद्देश्य बता दिया है। अब आपकी सभी क्रियायें स्वतः ही उस लक्ष्य की ओर उन्मुख होने लगेंगी और आप सर्वात्मना उसी लक्ष्य पर केन्द्रित हो जायेंगे तो फिर सफलता मिलेगी ही।

उपसंहार - सामान्यतः स्वप्न गाढ़ निद्रा में बाधक ही हैं। इनके कारण पूर्ण विश्राम नहीं मिल पाता। इसके रोकने के लिये स्वप्नों की दिशा बदलने का प्रयत्न जैसे ईश्वर चिन्तन या अपने उद्देश्य के स्वप्न लेते हुये सो जाना चाहिये। अथवा गाढ़ निद्रा ही आये स्वप्न नहीं इसके लिये नियमित दिनचर्या, शारीरिक श्रम का अभ्यास और मानसिक चिन्ता, दबाव, तनाव से पृथक् हो निश्चिन्त होकर शयन करना चाहिए।

पृष्ठ 5 का शेष

किसान आन्दोलन से आ रही षड़यन्त्र ....

इसका एक ही उत्तर है कि उन लोगों के इरादे नेक नहीं थे। उनके चेहरे का नकाब हट चुका है, उनका घिनौना चेहरा देश के सामने आ चुका है। वो किसानों के और किसानी के हक में आन्दोलन नहीं कर रहे थे। वे तो विदेशी ताकतों के बल पर कूद रहे थे। अब उनके पैर लड़खड़ा रहे हैं। वे निर्दोष किसानों को माध्यम बनाकर अपनी राजनीति चमका रहे हैं। इनकी खोखली हवाबाजी निकल चुकी है। ये लोग किसान नेता नहीं बल्कि किसानों के नाम पर गद्दार हैं। बात-बात पर यू-टर्न लेते है। देश वासियों की सहानुभूति भी खो चुके हैं।

आर्य समाज सदैव किसानों का सम्मान करता आया है लेकिन वास्तव में उन किसानों का जो सच में किसान हैं। ऐसे किसान नेताओं के प्रति आर्य समाज की कोई सहानुभूति नहीं है। जो खलनायक बनकर महान राष्ट्रीय पर्व गणतन्त्र दिवस जैसे अवसर पर देश की आन-बान और शान के खिलाफ उपद्रव करें, देश की पुलिस फोर्स पर जानलेवा हमला करें, तिरंगे झण्डे का अपमान करें, देश की सम्पत्ति को नष्ट करें, देश के विरुद्ध नारेबाजी करें ऐसे लोगों का आर्य समाज पूरा विरोध करता है, उनकी निंदा करता है और भर्त्सना करता है। साथ ही भारत सरकार से यह अनुरोध करता है कि देश विरोधी तथाकथित नेताओं को और जो विदेशों में बैठकर भारत के खिलाफ आग उगल रहे हैं ऐसे अराजक तत्वों को सबक सिखाये। उन्हें उनके ऊपर कानूनी कार्यवाही करें।

शोक समाचार

श्री मेहर सिंह आर्य जी का निधन

आर्यसमाज न्यू मोती नगर, नई दिल्ली के संरक्षक एवं वरिष्ठ सदस्य श्री मेहर सिंह आर्य जी का दिनांक 28 जनवरी, 2021 को 86 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पंजाबी बाग शमशान घाट पर पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा रविवार 7 फरवरी को उनके आवास एफ-2 कर्मपुरा में दोपहर 2 बजे से आयोजित की जाएगी।

डॉ. सत्यप्रकाश अग्रवाल जी का निधन

श्री विरजानन्द ट्रस्ट वेद मन्दिर मथुरा के संस्थापक आचार्य प्रेमभिक्षु जी के ज्येष्ठ सुपुत्र एवं वर्तमान अध्यक्ष एवं सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर के प्रधान श्री अशोक आर्य जी भ्राता डॉ. सत्यप्रकाश अग्रवाल जी का दिनांक 30 जनवरी, 2021 को अकस्मात निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

श्री देवदत्त त्रेहन जी का निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर के पूर्व प्रधान एवं आर्यनेता, दानवीर भामाशाह श्री देवदत्त त्रेहन जी का दिनांक 2 फरवरी, 2021 को 101 वर्ष की आयु में निधन हो गया। गत वर्ष ही उन्होंने शतायु को प्राप्त किया था। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया।

श्री दीनदयाल आर्य जी का निधन

सार्वदेशिक आर्य वीर दल मध्यप्रदेश के यशस्वी प्रान्तीय उप-संचालक एवम् आर्य समाज, महाराजपुर, छतरपुर के वरिष्ठ सदस्य श्री दीनदयाल आर्य (चौरसिया) का 28 जनवरी को इन्दौर में उपचार के दौरान निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 29 जनवरी को वैदिक रीति के साथ सम्पन्न हुआ।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

हवन सामग्री
मात्र 90/- किलो
10, 20 किलो की पैकिंग
प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें -
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली, मो. 9540040339

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा
के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

सोमवार 1 फरवरी, 2021 से रविवार 7 फरवरी, 2021
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 4-5/02/2021 (गुरु-शुक्रवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 3 फरवरी, 2021

गुरुकुलों की ब्रह्मचारिणियों में वेद प्रचार की अद्भुत क्षमता - डॉ. सत्यपाल सिंह

गत दिनों गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के माननीय कुलाधिपति एवं सांसद डॉ. सत्यपाल सिंह जी, कुलपति डॉ. रूप किशोर शास्त्री एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय प्रबन्धन बोर्ड के सदस्य श्री विनय आर्य जी ने देहरादून स्थित वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी देहरादून एवं मानव निर्माण केन्द्र द्रोण स्थली कन्या गुरुकुल देहरादून का निरीक्षण और अधिकारियों से भेंट की। इस अवसर पर कुलाधिपति डॉ. सत्यपाल सिंह जी ने कन्या गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों का मार्गदर्शन भी किया। उन्होंनें कन्याओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों में वेदों के प्रचार-प्रसार की अद्भुत क्षमता है।

प्रतिष्ठा में,

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

आप भी बनें यज्ञमित्र

कम से कम 12
नए परिवारों में यज्ञ कराएं
दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र
एन.सी.आर. में यज्ञमित्र बनने के
लिए सम्पर्क करें-
श्री सतीश चड्डा जी
महामन्त्री, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली
मो. 954004141, 9313013123

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के अन्तर्गत
वैदिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित
वैदिक साहित्य
अब
amazon
पर भी उपलब्ध
अपनी पसंदीदा वैदिक पुस्तकें घर बैठे
प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें
https://amzn.to/3i3rKI7

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
मो. 09540040339, 011-23360150

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह